पाठ - 3
नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

الدرس الثالث - هندي
النبى محمد ﷺ

अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्तिम रसूल बनाकर इस दुनिया में भेजा और आपकी रिसालत को आखिरी रिसालत बनाया। अल्लाह ने आप को दुनिया में भेजा ताकि आप लोगों को केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उसके अलावा बुत आदि जिन चीज़ों की भी लोग उपासना करते हैं उनसे बाज़ रहने की तालीम दी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चालीस साल की उम्र में नबी बनाया गया। सदाचार के मामले में नुबुवत मिलने से पहले ही आप न केवल अपनी क़ौम बल्कि सारे इन्सानों में सबसे प्रमुख व खास थे अतएव आप सच्चाई व ईमानदारी और ऊंचे अख़लाक़ के मामले में इतने अधिक जाने जाते थे कि लोगों ने अमीन आपका लक़ब रख दिया था। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनपढ़ थे आप पढ़ना और लिखना नहीं जानते थे अल्लाह ने आप पर क़ुरआन करीम जैसी किताब उतारी जिस के ताल्लुक से सारी मानव जाति को चुनौती दी कि इस जैसी कोइ किताब लाएं।

ईमान के अरकान

1.**अल्लाह पर ईमान** : यह ईमान की असल बुनियाद है अल्लाह पर ईमान का मतलब अल्लाह के वजूद पर पक्का यक़ीन रखना है और यह कि वही हर चीज़ का पालनहार और मालिक है। वही अकेला पैदा करने वाला है वही अकेला इबादत का हक़दार है। उसका कोई साझी नहीं है वह अपनी तमाम सिफ़ात में मुकम्मल है वह हर प्रकार के ऐब, कमियों और मख़लूक की समानता से पाक है।

2.**फ़रिश्तों पर ईमान** : फ़रिश्ते परोक्ष की दुनिया की मख़लूक़ है। वे अल्लाह की इबादत किया करते हैं। इनको खुदाई या हुकूमत की विषेशता हासिल नहीं है। अल्लाह ने इनको अपने आदेषों का पाबन्द बनाया है और उनको लागू करने की ताक़त प्रदान की है।

3. **आसमानी किताबों पर ईमान** : मुसलमान इस बात पर यक़ीन रखता है कि अल्लाह ने हक़ का परिचय और उसकी ओर दावत की मनषा से कुछ अम्बिया किराम और रसूलों पर आसमानी किताबें भेजीं जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात उतारी, ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील, दाऊद अलैहिस्सलाम पर जुबूर। इसी प्रकार एक मुसलमान इस बात पर भी ईमान रखता है कि क़ुरआन करीम को अल्लाह ने सब से अन्त में आख़िरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा

क़ुरआन मजीद : इन्सानियत के लिए अल्लाह का यह आख़िरी पैग़ाम है। अल्लाह किसी इन्सान से उस समय तक किसी अमल को स्वीकार नहीं करेगा जब तक उस का अमल क़ुरआन के अनुसार न हो। पूर्व आसमानी किताबों के लिए फ़ैसला और उनकी तसदीक़ करने वाली है। इस किताब की प्रमुख ख़ूबी यह है कि अल्लाह ने इस की हिफ़ाजत की जिम्मेदारी अपने पास ले रखी है अतएव न तो इस में किसी भी तरह से तब्दीली संभव है और न ही हेर फेर, जबकि पूर्व आसमानी किताबें हेर फेर और तब्दीली का शिकार हो गयीं क्यों कि अल्लाह ने क़ुरआन मजीद की तरह से और किताबों की हिफ़ाजत की जिम्मेदारी अपने सर नहीं ले रखी थी।

4. **रसूलों पर ईमान** : मुसलमान इस बात पर ईमान रखता है कि अल्लाह ने रसूलों को केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उसके खिलाफ़ अन्य तमाम चीज़ों को छोड़ने की दावत देने के लिए भेजा है। रसूल सब इन्सान और मख़लूक़ थे उन्हें खुदाई या हाकिमियत में से कोई खासियत हासिल नहीं थी। उन्हें दूसरे इन्सानों की तरह से खाने पीने, बीमारी और मौत जैसी ज़रूरतें पेश आती थीं। रसूल सबसे बेहतर इन्सान हैं अल्लाह ने रिसालत के लिए उन्हें चुन लिया है और पसन्द कर लिया है।

इसी तरह रसूलों पर ईमान में यह भी शामिल है कि हम इस बात को मानें कि उनकी रिसालत बरहक़ है और अल्लाह ने रसूलों में से जिनके नामों को बताया है हम उन नामों के साथ उन पर ईमान रखते हैं और उनके ताल्लुक़ से जो घटनाएं साबित हैं उन्हें भी मानते हैं अब इस शरीअत के अनुसार अमल करते हैं इस वजह से कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के बाद अल्लाह तआला दूसरी शरीअत को स्वीकार नहीं करेगा।

5. **आख़िरत पर ईमान** : इससे मुराद क़ियामत का दिन है जिस दिन अल्लाह हिसाब किताब के लिए सारे इन्सानों को दोबारा जिन्दा करेगा। इसे अल यवमुल आख़िर कहने का सबब यह है कि उसके बाद कोई दिन नहीं होगा। जन्नती लोग अपने ठिकानों में और जहन्नमी अपने ठिकानों में सदैव के लिए चले जाएंगे।

6. **तक़दीर पर ईमान लाना,** : इन्सान यह ईमान रखे कि वे सभी चीज़ें अल्लाह के इल्म में हैं जो हो रही हैं या जो हो चुकी हैं या जो आगे होंगी। और यह ईमान रखे कि अल्लाह ने जो चाहा वही हुआ और जो नहीं चाहेगा वह नहीं होगा। दुनिया में जो चीज़ें भी वजूद में आती हैं वे अल्लाह के इल्म में होती हैं और उसी की मर्ज़ी से अंजाम पाती हैं।